Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **01.06.2018** मस्जिद बैतुल फ़तूह, लंदन।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा किराम हज़रत उकाशा बिन मुहसिन, हज़रत ख़ारजः बिन ज़ैद, हज़रत ज़ियाद बिन लबीद, हज़रत मुतअब बिन उबैद, हज़रत ख़ालिद बिन बकीर रज़ीयल्लाहु अन्हुम के अद्वित्तीय बलिदानों का ईमान वर्धक वर्णन

मुकर्रम इस्माईल माला ग़ाला साहब मुबल्लिग़ सिलसिला योगेंडा की नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब तथा आपके सतगुणों का वर्णन

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक सहाबी हज़रत उकाशा बिन मोहसिन थे। हज़रत उकाशा बिन मोहसिन की गणना बड़े सहाबा में होती है। आप बद्र के युद्ध के अवसर पर घोड़े पर सवार होकर शामिल हुए उस दिन आपकी तलवार टूट गई। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको एक लकड़ी दी तो मानो वह आपके हाथ में बड़े तेज़ और साफ़ लोहे की तलवार बन गई और आप उसी से लड़े यहाँ तक अल्लाह तआला ने विजय प्रदान की। फिर उसी तलवार के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ समस्त युद्धों में भाग लिया तथा यह लकड़ी की तलवार निधन के समय तक आपके पास ही थी, उस तलवार का नाम औन था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको शुभ सूचना दी थी कि तुम जन्नत में बिना हिसाब के दाख़िल होगे। बद्र की लड़ाई के अवसर पर रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से फ़रमाया कि अरब का सर्वश्रेष्ट घुड़सवार हमारे साथ शामिल है। सहाबा ने पूछा या रसूलुल्लाह वह कौन व्यक्ति है? फ़रमाया- उकाशा बिन मुहसिन। हज़रत अबूहुरैरा रज़ीयल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आपने फ़रमाया कि मेरी उम्मत का एक गिरोह जन्नत में दाख़िल होगा, वे सत्तर हज़ार होंगे तथा उनके चेहरे चौधवीं के चाँद की भांति रौशन होंगे। हज़रत उकाशा बिन मुहसिन खड़े हुए तथा निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह से दुआ करें कि मुझे भी उनमें से बना दे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह इसे भी उनमें शामिल फ़रमा दे। फिर अन्सार में से एक व्यक्ति खड़ा हुआ तथा निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह, दुआ करें कि मुझे भी उनमें से बना दे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उकाशा इस विषय में तुझ पर प्रधानता ले गया। हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उकाशा को विभिन्न सैन्य अभियानों में अमीर बनाकर भेजा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रबीउल अव्वल छः हिजरी में हज़रत उकाशा को चालीस मुसलमानों का अफ़सर बनाकर क़बीला बनी सअद के मुक़ाबले पर भेजा। यह क़बीला एक पानी के सोत के निकट एक स्थान पर डेरा डाले पड़ा था जिसका नाम ग़मर था जो मदीना से मक्का की दिशा में कुछ दिनों की यात्रा की दूरी पर था। उकाशा की पार्टी जल्दी जल्दी यात्रा करके निकट पहुंची ताकि उन्हें आतंक से रोका जाए तो पता चला कि क़बीले के लोग मुसलमानों के आने की सुचना पाकर इधर उधर भाग गए थे। इस पर उकाशा तथा उनके साथी मदीना की ओर लौट आए और कोई लड़ाई नहीं हुई।

हज़रत इब्ने अब्बास बयान करते हैं कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सूरः अल-नसर नाज़िल हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल को अज़ान देने का आदेश दिया। नमाज़ के पश्चात आप सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने एक सम्बोधन किया जिसे सुनकर लोग बड़ा रोए फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, ऐ लोगो, मैं कैसा नबी हूँ? इस पर उन लोगों ने कहा- अल्लाह आपको प्रतिफल प्रदान करे, आप सर्वश्रेष्ट नबी हैं, आप हमारे लिए एक दयालु बाप की भांति हैं तथा स्नेह करने वाले और उपदेश देने वाले भाई की भांति हैं। आपने हम तक अल्लाह के कलाम पहुंचाए तथा उसकी वह्यी पहुंचाई और हिकमत और अच्छी नसीहत के साथ हमें अपने रब के रास्ते की ओर बुलाया। अतः अल्लाह आपको अति सुन्दर प्रतिफल प्रदान करे जो वह अपने नबियों को देता है। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- ऐ मुसलमानों के गिरोह! मैं तुम्हें अल्लाह की और तुम पर अपने अधिकार की सौगन्ध देकर कहता हूँ कि यदि किसी पर मेरी ओर से कोई अत्याचार अथवा जुल्म हुआ तो वह खड़ा हो तथा मुझसे बदला ले ले। किन्तु कोई खड़ा नहीं हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूसरी बार सौगन्ध देकर कहा किन्तु कोई खड़ा नहीं हुआ। आपने तीसरी बार फिर फ़रमाया कि ऐ मुसलमानों के गिरोह! मैं तुम्हें अल्लाह तथा तुम पर अपने हक़ की क़सम देकर कहता हूँ कि यदि किसी पर मेरी ओर से कोई दुर्व्यवहार अथवा अत्याचार हुआ हो तो वह उठे और मेरे से बदला ले ले, क़यामत के दिन के बदले से पहले। इस पर लोगों में से एक बूढ़े व्यक्ति खड़े हुए जिनका नमा उकाशा था। आप मुसलमानों में से होते हुए आगे आए यहाँ तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समक्ष खड़े हो गए तथा निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान, यदि आपने बार बार सौगन्ध न दी होती तो मैं कदाचित खड़ा न होता। मैं आपके साथ एक युद्ध पर था जिससे वापसी पर मेरी ऊँटनी आपकी ऊँटनी के निकट आ गई तो मैं अपनी सवारी से उतर कर आपके निकट आया ताकि आपके पाँव को चूम लूँ, किन्तु आपने छड़ी मारी जो मेरे शरीर पर लगी। मुझे नहीं पता कि वह छड़ी आपने ऊँटनी को मारी थी अथवा मुझे। इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- अल्लाह के प्रताप की सौगन्ध, ख़ुदा का रसूल जान बूझकर तुझे नहीं मार सकता। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- ऐ बिलाल! फ़ातिमा की तरफ़ जाओ और उससे वह छड़ी ले आओ। हज़रत बिलाल गए तथा फ़ातिमा से निवेदन किया कि ऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी! मुझे छड़ी दे दें। हज़रत बिलाल मस्जिद आए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को छड़ी पकड़ा दी और आप स. ने वह छड़ी उकाशा को पकड़ाई। आप स. ने फ़रमाया- ऐ उकाशा मारो। हज़रत उकाशा ने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब आपने मुझे मारा था तो उस समय मेरे पेट पर कपड़ा नहीं था। इस पर आप स. ने अपने पेट पर से कपड़ा उठाया। इस पर मुसलमान ज़ोर से रोने लगे तथा कहने लगे कि उकाशा वास्तव में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मारेगा। परन्तु जब हज़रत उकाशा ने आप स. के शरीर की सफ़ेदी देखी तो दीवानों की भांति लपक कर आगे बढ़े तथा आपके शरीर को चूमने लगे तथा निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किस का दिल कर सकता है कि वह आपसे बदला ले। इस पर आप स. ने फ़रमाया- या बदला लेना है या क्षमा करना है। इस पर हज़रत उकाशा ने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह मैंने क्षमा किया इस आशा के साथ कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला मुझे माफ़ कर दे। इस पर आप स. ने लोगों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि जो जन्नत में मेरा साथी देखना चाहता है वह इस बूढ़े व्यक्ति को देख ले। अतः मुसलमान उठे और हज़रत उकाशा का माथा चुमने लगे तथा उनको मुबारकबाद देने लगे कि तू ने बड़ा उच्च स्तर और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संगति को प्राप्त कर लिया है। हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के साथ हज़रत उकाशा इस्लाम से विमुख लोगों को धराशाही करने के लिए चले। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद, हज़रत उकाशा बिन मोहसिन तथा हज़रत साबिन बिन अकरम को भेदी बनाकर भेजा कि दुश्मन के विषय में जानकारी प्राप्त करके लाएँ। वे दोनों घोड़ों पर सवार थे। हज़रत उकाशा के घोड़े का नाम अलरिज़ाम तथा हज़रत साबित के घोड़े का नाम अलमुहबर था। इन दोनों का सामना तुलैहा तथा उसके भाई सलमा से हुआ जो मुसलमानों की ख़बरें देने के लिए लश्कर से आगे आए हुए थे। तुलैहा का सामना हज़रत उकाशा से हुआ तथा सलमा का सामना हज़रत साबित से हुआ तथा इन दोनों भाईयों ने इन दोनों सहाबियों को शहीद कर दिया। यह घटना 12 हिजरी की है, इस प्रकार इनकी शहादत हुई।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक सहाबी हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद थे। हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद का सम्बंध ख़िज़रज के वंश अग़ज़ नामक से था। हज़रत ख़ारजा की बेटी हज़रत हबीबा बिन्त ख़ारजा, हज़रत अबू बकर

सिद्दीक़ की पत्नि थीं जिनके पेट से हज़रत अबू बकर सिददीक़ रज़ी. की पुत्री हज़रत उम्मे कुलसूम पैदा हुईं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ की बीच भाईयों जैसा सम्बंध स्थापित फ़रमाया। क़बीले के रईस थे तथा उनको बड़े सहाबा में शामिल किया जाता था, उन्होंने उक़बा में बैअत की थी। मदीना की हिजरत के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद के घर विश्राम किया। यह बद्र की लड़ाई में सम्मिलित हुए, हज़रत ख़ारजा ओहद के युद्ध में बड़ी वीरता एवं दलेरी से लड़ते हुए शहीद हुए। तीरों के सामने आ गए तथा आपको तेरह से अधिक घाव लगे, आप घाव के कारण निढाल पड़े थे कि उनके निकट से सफ़वान बिन उमय्या गया, उसने इन्हें पहचान लिया तथा आक्रमण करके शहीद कर दिया फिर उनके शरीर को ख़ूब रौंदा तथा कहा कि यह उन लोगों में से है जिन्होंने बद्र के युद्ध में अबू अली का वध किया था अर्थात मेरे बाप उमय्या बिन ख़लफ़ को, अब मुझे अवसर मिला है कि इन मुहम्मद स. के सहाबा में से उच्चतम लोगों का वध करूँ और अपना दिल ठंडा करूँ। उसने हज़रत इब्ने क़ोक़ल, हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद तथा हज़रत औस बिन अरक़िम को शहीद किया।

हज़रत ख़ारजा और हज़रत सअद बिन रबीअ जो कि आपके चचेरे भाई थे, दोनों को एक ही क़ब्र में दफ़न किया गया। कहा जाता है कि ओहद के दिन हज़रत अब्बास बिन अबादा ऊँची आवाज़ के साथ कह रहे थे कि ऐ मुसलमानों के गिरोह! अल्लाह और अपने नबी के साथ जुड़े रहो। जो कठिनाई तुम्हें पहुंची है, यह अपने नबी की अवज्ञा के कारण पहुंची है, वह तुम्हें सहायता का वादा देता था किन्तु तुमने धैर्य से काम नहीं लिया। फिर हज़रत अब्बास बिन अबादा ने अपना कवच और अपने सैन्य वस्त्र उतारे तथा हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद से पूछा कि क्या आपको इनकी आवश्कता है। ख़ारजा ने कहा- नहीं, जिस बात की तुम अभिलाषा करते हो वही मैं भी चाहता हूँ फिर वे सब दुश्मन से भिड़ गए। अब्बास बिन अबादा कहते थे कि हमारे सामने यदि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कोई हानि पहुंची तो हमारा अपने रब के सामने क्या जवाब होगा और हज़रत ख़ारजा यह कहते थे कि अपने सामने हमारे पास न तो कोई उत्तर होगा और न ही कोई दलील। हज़रत अब्बास बिन अबादा को सुफ़यान बिन अब्दे शम्स ने शहीद किया तथा ख़ारजा बिन ज़ैद को तीरों के कारण शरीर पर दस से अधिक घाव लगे। ओहद के युद्ध के दिन हज़रत मालिक बिन दुख़शम, हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद के पास से गुज़रे। हज़रत ख़ारजा घावों से चूर बैठे थे, उनको लगभग तेरह कारी घाव लगे थे। हज़रत मालिक ने उनसे कहा- क्या आपको पता नहीं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद कर दिए गए हैं। हज़रत ख़ारजा ने कहा कि यदि आप स. को शहीद कर दिया गया तो निःसन्देह अल्लाह जीवित है और वह नहीं मरेगा। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पैग़ाम पहुंचा दिया है तुम भी अपने दीन के लिए युद्ध करो।

फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक सहाबी हज़रत ज़ियाद बिन लबीद थे। उक़बा सानिया में आप सत्तर लोगों के साथ उपस्थित हुए तथा इस्लाम क़बूल किया। इस्लाम क़बूल करने के बाद जब मदीना वापस आए तो आते ही अपने क़बीले बनू बियाज़ा के बुत तोड़ दिए। फिर आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास मक्का चले गए तथा वहीं निवास किया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मदीना हिजरत के बाद आपने भी मदीना हिजरत की इस लिए हज़रत ज़ियाद को मुहाजिर अन्सारी कहा जाता है। हज़रत ज़ियाद बद्र, ओहद, खंदक़ तथा समस्त युद्धों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथी रहे थे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिजरत करके मदीना पहुंचे तथा क़बीला बनू बियाज़ा के मुहल्ले से गुज़रे तो हज़रत ज़ियाद ने स्वागतम कहा तथा विश्राम के लिए अपना मकान पेश किया तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी ऊँटनी को आज़ाद छोड़ दो, यह स्वयं मंज़िल तलाश कर लेगी। मुहर्रम नौ हिजरी में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सदक़ा तथा ज़कात वसूल करने के लिए अलग अलग वसूल करने वाले नियुक्त फ़रमाए तो हज़रत ज़ियाद को हिज़रे मौत के इलाक़े में वसूली करने वाला नियुक्त फ़रमाया। हज़रत उमर के दौर तक आप इसी सेवा पर विद्यमान रहे, इस पद से मुक्त होने के पश्चात आपने कूफ़ा में निवास कर लिया तथा वहीं इकतालीस हिजरी में निधन हुआ।

फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक सहाबी थे हज़रत मुअतब बिन उबैद, बद्र तथा ओहद के युद्धों में शामिल हुए तथा उन्होंने यौमुर्रजीअ में शहादत पाई। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब लिखते हैं कि ये दिन मुसलमानों

के लिए बड़े भयावह दिन थे तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चारों ओर से भयानक सूचनाएं आ रही थीं किन्तु सबसे बढ़कर भय आपको मक्का के क़ुरैश के कारण था जो बद्र के युद्ध में पराजित होने कारण बड़े उत्तेजित हो रहे थे। इस भय का अनुभव करके आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिफ़र के महीने चार हिजरी में अपने दस सहाबियों की एक पार्टी तय्यार की तथा उन पर अहसन बिन साबित को अमीर नियुक्त फ़रमाया तथा उनको यह ओदश दिया कि चुपके चुपके मक्का के निकट जाकर क़ुरैश की स्थिति का पता लगाएँ तथा उनकी गतिविधियों एवं योजनाओं से अवगत कराएँ, परन्तु अभी यह पार्टी भेजी नहीं गई थी कि अज़्ल और क़ारह क़बीलों के कुछ लोग आपकी सेवा में उपस्थित हुए तथा निवेदन किया कि हमारे क़बीले के बहुत से आदमी इस्लाम में रूचि रखते हैं आप कुछ आदमी हमारे साथ भेज दें जो हमें मुसलमान बनाएँ तथा इस्लाम की शिक्षा दें। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी इस इच्छा की पूर्ति के लिए वही पार्टीं जो सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए तय्यार की गई थी उनके साथ भेज दी, परन्तु वास्तव में जैसा कि बाद में ज्ञात हुआ कि ये लोग झूठे थे तथा बनू लहान के चढ़ाने के कारण मदीना आए थे जिन्होंने अपने रईस सुफ़यान बिन ख़ालिद की हत्या का बदला लेने के लिए यह चाल चली थी कि इस बहाने से मुसलमान मदीना से निकलें तो उन पर आक्रमण कर दिया जाए। जब अज़्ल और क़ारह के ये द्रोही लोग असफ़ान और मक्का की बीच पहुंचे तो उन्होंने बनू लोहान को चुपचाप सूचना भेज दी कि मुसलमान हमारे साथ आ रहे हैं, तुम आ जाओ। जिस पर क़बीला बनू लोहान के दौ सौ नौजवान जिनमें से एक सौ तीर चलाने में निपुण थे, मुसलमानों का पीछा करने के लिए निकल खड़े हुए तथा रजीअ नामक स्थान पर उनको आ पकड़ा। दस आदमी दौ सौ सैनिकों का क्या मुक़ाबला कर सकते थे अतः ये सहाबी तुरन्त निकट के एक टीले पर चढ़ कर मुक़ाबले के लिए तय्यार हो गए। काफ़िरों ने इनको आवाज़ दी कि तुम पहाड़ी पर से नीचे उतर आओ, हम तुमसे पक्का वादा करते हैं कि तुम्हारी हत्या नहीं करेंगे। आसिम रज़ीयल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया कि हमें तुम्हारे वादे और प्रतिज्ञा पर कोई भरोसा नहीं, फिर आसमान की ओर मुंह उठाकर कहा कि ऐ ख़ुदा! तू हमारी दशा को देख रहा है, अपने रसूल को हमारी इस दशा की सूचना दे दे। अन्ततः आसिम और उनके साथियों ने मुक़ाबला किया तथा लड़ते लड़ते शहीद हो गए।

फिर एक वर्णन है बद्र के सहाबा में हज़रत ख़ालिद बिन बकीर का। हज़रत ख़ालिद बिन बकीर, आक़िल, हज़रत आमिर तथा हज़रत अयास ने एक साथ दारे अरक़िम में इस्लाम क़बूल किया था तथा इन चारों भाईयों ने दारे अरक़िम में सबसे पहले इस्लाम क़बूल किया था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़ालिद बिन बकीर तथा हज़रत ज़ैद बिन दसना के मध्य भाईचारा स्थापित फ़रमाया। आप बद्र और ओहद के युद्ध में उपस्थित थे। आप सिफर 4 हिजरी को 34 वर्ष की आयु में रजीअ में आसिम बिन साबित तथा मुरसद बिन अबी मुरसद ग़नवी के साथ, अज़्ल और वक़ारह के क़बीलों के साथ लड़ते हुए शहीद हुए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- तो ये वे लोग थे जिन्होंने दीन की सुरक्षा के लिए, अपने ईमान की सुरक्षा के लिए बलिदान दिए तथा अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाले बने। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी एक पुस्तक में सहाबा के विषय में फ़रमाते हैं कि उस भेजने वाले ख़ुदा का धन्यवाद है जो उपकार करने वाला तथा दुःखों को दूर करने वाला है, उसके रसूल पर दरूद और सलाम जो इंसानों तथा जिनों का इमाम तथा पवित्र मन और जन्नत की ओर खींचने वाला है और उसके सहाबियों पर सलाम जो ईमान के स्रोत की ओर प्यासे की भांति दौड़े तथा पथभ्रष्टता की अंधेरी रातों में विद्या तथा कर्मों के कमाल से प्रकाशमान किए गए जो दिन में मैदानों के शेर रातों के राहिब हैं और दीन के सितारे हैं। अल्लाह तआला हमें भी अपनी इलमी तथा अमली हालतों को बेहतर करने तथा रातों की इबादतों के स्तर बुलन्द करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

ख़ुत्बः जुम्अः के बाद हुज़ूर-ए-अनवर ने मुकर्रम इस्माईल माला ग़ाला साहब, योगेन्डा के मुबल्लिग़-ए-सिलसिला के सद्गुणों का वर्णन फ़रमाया जिनका 25 मई 2018 को निधन हुआ और नमाज़ जुम्अः के बाद आपकी नमाज़ जनाज़ा ग़ायब अदा की।

Toll Free NO: 180030102131